Wuzu Aur Science (Hindi)

वुज़ू और साइन्स

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَاءَ اللہ عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج۱ ص۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

वुज़ू और साइन्स

येह रिसाला (**वुज़ू और साइन्स**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

वुज़ू और साइन्स[1]

सिर्फ़ 23 सफ़हात पर मब्नी येह बयान मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप वुज़ू के बारे में ह़ैरत अंगेज़ मा'लूमात से मालामाल होंगे ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में **मह़ब्बत** रखने वाले जब बाहम (या'नी आपस में) मिलें और **मुसा-फ़ह़ा** करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ें तो उन के जुदा होने से पहले पहले दोनों[2] के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।" (مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج۳ص۹۵حدیث۲۹۵۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वुज़ू की ह़िक्मतें सुनने के सबब क़बूले इस्लाम

एक साह़िब का बयान है : मैं ने **बेल्जियम** में यूनीवर्सिटी के एक ग़ैर मुस्लिम Student (त़ालिबे इ़ल्म) को इस्लाम की दा'वत दी ।

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के त़-लबा के दो[2] रोज़ा इज्तिमाअ़ (मुह़र्रमुल ह़राम 1421 सि.हि./06-04-2000) नवाब शाह पाकिस्तान में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

उस ने सुवाल किया, वुज़ू में क्या क्या साइन्सी हिक्मतें हैं ? मैं ला जवाब हो गया। उस को एक आ़लिम के पास ले गया लेकिन उन को भी इस की मा'लूमात न थीं। यहां तक कि साइन्सी मा'लूमात रखने वाले एक शख़्स ने उस को वुज़ू की काफ़ी ख़ूबियां बताईं मगर गरदन के मस्ह़ की हिक्मत बताने से वोह भी क़ासिर रहा। वोह ग़ैर मुस्लिम नौ जवान चला गया। कुछ अ़र्से के बा'द आया और कहने लगा : हमारे प्रोफ़ेसर ने दौराने लेक्चर बताया : "**अगर गरदन की पुश्त और अत़राफ़ पर रोज़ाना पानी के चन्द क़त़रे लगा दिये जाएं तो रीढ़ की हड्डी और ह़राम मग़ज़ की ख़राबी से पैदा होने वाले अमराज़ से तहफ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो जाता है।**" येह सुन कर वुज़ू में गरदन के मस्ह़ की हिक्मत मेरी समझ में आ गई लिहाज़ा मैं मुसल्मान होना चाहता हूं और वोह मुसल्मान हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मग़रिबी जर्मनी का सेमीनार

मग़रिबी ममालिक में मायूसी (या'नी Depression) का मरज़ तरक़्क़ी पर है, दिमाग़ फ़ेल हो रहे हैं, पागल ख़ानों की ता'दाद में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। नफ़्सियाती अमराज़ के माहिरीन के यहां मरीज़ों का तांता बंधा रहता है। मग़रिबी जर्मनी के डिप्लोमा होल्डर एक पाकिस्तानी फ़िज़ियो थेरापिस्ट का कहना है : मग़रिबी जर्मनी में एक सेमीनार हुवा जिस का मौज़ूअ़ था : "मायूसी (Depression) का इलाज अदवियात के इ़लावा और किन किन त़रीक़ों से मुम्किन है" एक डॉक्टर ने अपने मक़ाले में

येह हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ किया कि मैं ने डिप्रेशन के चन्द मरीज़ों के रोज़ाना पांच[5] बार मुंह धुलाए कुछ अ़र्से बा'द उन की बीमारी कम हो गई । फिर ऐसे ही मरीज़ों के दूसरे ग्रूप के रोज़ाना पांच[5] बार हाथ, मुंह और पाउं धुलवाए तो मरज़ में बहुत इफ़ाक़ा हो गया (या'नी कमी आ गई) । येही डॉक्टर अपने मक़ाले के आख़िर में ए'तिराफ़ करता है : **मुसल्मानों में मायूसी का मरज़ कम पाया जाता है क्यूं कि वोह दिन में कई मर्तबा हाथ, मुंह और पाउं धोते (या'नी वुज़ू करते) हैं ।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू और हाई ब्लड प्रेशर

एक हार्ट स्पेश्यालिस्ट का बड़े वुसूक़ (या'नी ए'तिमाद) के साथ कहना है : **हाई ब्लड प्रेशर** के मरीज़ को वुज़ू करवाओ फिर उस का ब्लड प्रेशर चेक करो लाज़िमन कम होगा । एक मुसल्मान माहिरे नफ़्सियात का क़ौल है : **''नफ़्सियाती अमराज़ का बेहतरीन इलाज वुज़ू है ।''** मग़रिबी माहिरीन नफ़्सियाती मरीज़ों को वुज़ू की त़रह़ रोज़ाना कई बार बदन पर पानी लगवाते हैं ।

वुज़ू और फ़ालिज

वुज़ू में जो तरतीब वार आ'ज़ा धोए जाते हैं येह भी ह़िक्मत से ख़ाली नहीं । पहले हाथ पानी में डालने से जिस्म का आ'साबी निज़ाम मुत्तलअ़ हो जाता है और फिर आहिस्ता आहिस्ता चेहरे और दिमाग़ की रगों की त़रफ़ इस के अ-सरात पहुंचते हैं । वुज़ू में पहले हाथ धोने फिर

कुल्ली करने फिर नाक में पानी डालने फिर चेहरा और दीगर आ'ज़ा धोने की तरतीब **फ़ालिज** की रोकथाम के लिये मुफ़ीद है । अगर चेहरा धोने और मस्ह़ करने से आग़ाज़ किया जाए तो बदन कई बीमारियों में मुब्तला हो सकता है !

मिस्वाक का क़द्रदान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू में मु-तअ़द्दद सुन्नतें हैं और हर सुन्नत मख़्ज़ने हिक्मत है । मिस्वाक ही को ले लीजिये ! बच्चा बच्चा जानता है कि वुज़ू में मिस्वाक करना सुन्नत है और इस सुन्नत की ब-र-कतों का क्या कहना ! एक ब्योपारी का कहना है : स्वीज़र लेन्ड में एक नौ मुस्लिम से मेरी मुलाक़ात हुई, उस को मैं ने तोह़्फ़तन मिस्वाक पेश की, उस ने ख़ुश हो कर उसे लिया और चूम कर आंखों से लगाया और एक दम उस की आंखों से आंसू छलक पड़े, उस ने जेब से एक रुमाल निकाला उस की तह खोली तो उस में से तक़रीबन दो2 इन्च का छोटा सा **मिस्वाक** का टुकड़ा बरआमद हुवा । कहने लगा : मेरी इस्लाम आ-वरी के वक़्त मुसल्मानों ने मुझे येह तोह़्फ़ा दिया था । मैं बहुत संभाल संभाल कर इस को इस्ति'माल कर रहा था येह ख़त्म होने को था लिहाज़ा मुझे तश्वीश थी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया और आप ने मुझे मिस्वाक इनायत फ़रमा दी । फिर उस ने बताया कि एक अ़र्से से मैं दांतों और मसूढ़ों की तक्लीफ़ से दो चार था । हमारे यहां के **डेन्टिस्ट** से इन का इलाज बन नहीं पड़ रहा था । मैं ने इस **मिस्वाक** का इस्ति'माल शुरूअ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

किया थोड़े ही दिनों में मुझे इफ़ाक़ा (फ़ाएदा) हो गया । मैं डॉक्टर के पास गया तो वोह ह़ैरान रह गया और पूछने लगा, मेरी दवा से इतनी जल्दी तुम्हारा मरज़ दूर नहीं हो सकता, सोचो कोई और वजह होगी । मैं ने जब ज़ेह्न पर ज़ोर दिया तो ख़याल आया कि मैं मुसल्मान हो चुका हूं और येह सारी ब-र-कत **मिस्वाक** ही की है । जब मैं ने डॉक्टर को **मिस्वाक** दिखाई तो वोह ह़ैरत से देखता ही रह गया ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मिस्वाक में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं । इस में मु-तअ़द्दद कीमियावी अज्ज़ा हैं जो दांतों को हर त़रह़ की बीमारी से बचाते हैं । ह़ाशिया त़ह़त़ावी में है : **"मिस्वाक से क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा बढ़ती, दर्दे सर दूर होता और सर की रगों को सुकून मिलता है, इस से बल्ग़म दूर, नज़र तेज़, मे'दा दुरुस्त और खाना हज़्म होता है, अ़क़्ल बढ़ती, बच्चों की पैदाइश में इज़ाफ़ा होता, बुढ़ापा देर में आता और पीठ मज़्बूत़ होती है ।"**

(حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح ص٦٩)

मिस्वाक के बारे में दो अह़ादीसे मुबा-रका

﴾1﴿ जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मुबारक घर में दाख़िल होते तो सब से पहले मिस्वाक करते (مسلم ص١٥٢حدیث٢٥٣) ﴾2﴿ जब सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नींद से बेदार होते तो मिस्वाक करते ।

(ابوداؤد ج١ ص٥٤ حدیث٥٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

मुंह के छाले का इलाज

अतिब्बा (या'नी डॉक्टरों) का कहना है : "बा'ज़ अवक़ात गरमी और मे'दे की तेज़ाबिय्यत से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और इस मरज़ से ख़ास क़िस्म के जरासीम मुंह में फैल जाते हैं, इस के इलाज के लिये मुंह में ताज़ा मिस्वाक मलें और इस का लुआ़ब कुछ देर तक मुंह के अन्दर फिराते रहें । इस त़रह़ कई मरीज़ ठीक हो चुके हैं ।"

टूथ ब्रश के नुक़्सानात

माहिरीन की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ "80 फ़ीसद अमराज़ मे'दे (पेट) और दांतों की ख़राबी से पैदा होते हैं ।" उ़मूमन दांतों की सफ़ाई का ख़याल न रखने की वजह से मसूढ़ों में त़रह़ त़रह़ के जरासीम परवरिश पाते फिर मे'दे में जाते और त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का सबब बनते हैं । याद रहे ! "टूथ ब्रश" मिस्वाक का ने'मल बदल नहीं । बल्कि माहिरीन ने ए'तिराफ़ किया है : ﴾1﴿ जब ब्रश एक बार इस्ति'माल कर लिया जाता है तो उस में जरासीम की तह जम जाती है पानी से धुलने पर भी वोह जरासीम नहीं जाते बल्कि वहीं नश्वो नुमा पाते रहते हैं ﴾2﴿ ब्रश के बाइ़स दांतों की ऊपरी क़ुदरती चमकीली तह उतर जाती है ﴾3﴿ ब्रश के इस्ति'माल से मसूढ़े आहिस्ता आहिस्ता अपनी जगह छोड़ते जाते हैं जिस से दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) पैदा हो जाता है और उस में ग़िज़ा के ज़र्रात फंसते, सड़ते और जरासीम अपना घर बनाते हैं इस से दीगर बीमारियों के इ़लावा आंखों के त़रह़ त़रह़ के अमराज़ भी जनम लेते हैं, इस से नज़र कमज़ोर हो जाती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात आदमी **अन्धा** हो जाता है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?

हो सकता है आप के दिल में येह ख़याल आए कि मैं तो बरसों से मिस्वाक इस्ति'माल करता हूं मगर मेरे तो दांत और पेट दोनों ही ख़राब हैं ! मेरे भोले भाले इस्लामी भाई ! इस में मिस्वाक का नहीं आप का अपना क़ुसूर है। मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आज शायद लाखों में से कोई एकआध ही ऐसा हो जो सह़ीह़ उसूलों के मुत़ाबिक़ मिस्वाक इस्ति'माल करता हो, हम लोग अक्सर जल्दी जल्दी दांतों पर मिस्वाक मल कर वुज़ू कर के चल पड़ते हैं या'नी यूं कहिये कि हम मिस्वाक नहीं बल्कि ''रस्मे मिस्वाक'' अदा करते हैं !

"मिस्वाक करना सुन्नते मुबा-रका है" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 20 म-दनी फूल

❁ **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : दो[2] रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج١ ص١٠٢ حديث١٨) ❁ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि येह मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٢ ص٤٣٨ حديث٥٨٦٩) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़्बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बल्ग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج٥ ص٢٤٩ حديث١٤٨٦٧) ❁ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : चार[4] चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, **मिस्वाक** का इस्ति'माल, सु-लह़ा या'नी नेक लोगों की सोह़बत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना (حياة الحيوان للدميرى ج ٢ص١٦٦)

❁ **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी हैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि : "तूने मेरे प्यारे ह़बीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? मैं ने तुझे जो मालो दौलत दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इतनी अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" (مُلَخَّص از لواقح الانوار ص ٣٨) ❁ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 288 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह**, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं, मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स **मिस्वाक** का आ़दी हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

कलिमा नसीब न होगा ❁ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ❁ मिस्वाक की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❁ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ❁ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (Gap) का बाइस बनते हैं ❁ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना इस का एक सिरा कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ❁ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कारआमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ❁ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ❁ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ❁ हर बार धो लीजिये ❁ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ❁ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ❁ मुट्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ❁ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ❁ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

हाथ धोने की हिक्मतें

वुज़ू में सब से पहले हाथ धोए जाते हैं इस की हिक्मतें मुला-ह़ज़ा हों : मुख़्तलिफ़ चीज़ों में हाथ डालते रहने से हाथों में मुख़्तलिफ़ कीमियावी अज्ज़ा और जरासीम लग जाते हैं अगर सारा दिन न धोए जाएं तो जल्द ही हाथ इन जिल्दी अमराज़ में मुब्तला हो सकते हैं : ﴾1﴿ हाथों के गरमी दाने ﴾2﴿ जिल्दी सोज़िश या'नी खाल की सूजन ﴾3﴿ एग्ज़ीमा ﴾4﴿ **फफूंदी**[1] की बीमारियां ﴾5﴿ जिल्द की रंगत तब्दील हो जाना वग़ैरा। जब हम हाथ धोते हैं तो उंग्लियों के पोरों से शुआ़एं (Rays) निकल कर एक ऐसा ह़ल्क़ा बनाती हैं जिस से हमारा अन्दरूनी बर्क़ी निज़ाम **मु-तह़र्रिक** हो जाता है और एक ह़द तक बर्क़ी रौ हमारे हाथों में सिमट आती है जिस से हमारे हाथों में हुस्न पैदा हो जाता है।

कुल्ली करने की हिक्मतें

पहले हाथ धो लिये जाते हैं जिस से वोह जरासीम से पाक हो जाते हैं वरना येह कुल्ली के ज़रीए़ मुंह में और फिर पेट में जा कर मु-तअ़द्दद अमराज़ का बाइ़स बन सकते हैं। हवा के ज़रीए़ ला ता'दाद मोहलिक जरासीम नीज़ ग़िज़ा के अज्ज़ा हमारे मुंह और दांतों में लुआ़ब के साथ चिपक जाते हैं। चुनान्चे वुज़ू में मिस्वाक और कुल्लियों के ज़रीए़ मुंह की बेहतरीन सफ़ाई हो जाती है। अगर मुंह को साफ़ न किया जाए तो इन अमराज़ का ख़त़रा पैदा हो जाता है : ﴾1﴿ एड्ज़ (Aids) कि इस की इब्तिदाई अ़लामात में मुंह का पकना भी शामिल है। **एड्ज़** का ता ह़ाल डॉक्टर इलाज दरयाफ़्त नहीं कर पाए इस

1 : वोह जरासीम जो किसी चीज़ पर काई की त़रह़ जम जाते हैं।

मरज़ में बदन का मुदा-फ़-अ़ती निज़ाम नाकारा हो जाता है, इस में अमराज़ का मुक़ाबला करने की क़ुव्वत नहीं रहती और मरीज़ घुल घुल कर मर जाता है ﴿2﴾ मुंह के कनारों का फटना ﴿3﴾ मुंह और होंटों की दादकूबा (Moniliasis) ﴿4﴾ मुंह में **फफूंदी** की बीमारियां और छाले वग़ैरा। नीज़ रोज़ा न हो तो कुल्ली के साथ ग़र-ग़रा करना भी सुन्नत है। **और पाबन्दी के साथ ग़र-ग़रे करने वाला कव्वे (Tonsil) बढ़ने और गले के बहुत सारे अमराज़ ह़त्ता कि गले के केन्सर से मह़फ़ूज़ रहता है।**

नाक में पानी डालने की ह़िक्मतें

फेफड़ों को ऐसी हवा दरकार होती है जो जरासीम, धूएं और गर्दो ग़ुबार से पाक हो और उस में 80 फ़ीसद रत़ूबत (या'नी तरी) हो ऐसी हवा फ़राहम करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें नाक की ने'मत से नवाज़ा है। हवा को मरत़ूब या'नी नम बनाने के लिये नाक रोज़ाना तक़रीबन चौथाई गेलन नमी पैदा करती है। सफ़ाई और दीगर सख़्त काम नथनों के बाल सर अन्जाम देते हैं। नाक के अन्दर एक ख़ुर्द बीनी (Microscopic) झाड़ू है। इस झाड़ू में ग़ैर म-र-ई या'नी नज़र न आने वाले रूएं होते हैं जो हवा के ज़रीए़ दाख़िल होने वाले जरासीम को हलाक कर देते हैं। नीज़ इन ग़ैर म-र-ई रूओं के ज़िम्मे एक और दिफ़ाई निज़ाम भी है जिसे इंग्रेज़ी में lysozyme (**लैसोज़ाइम**) कहते हैं, नाक इस के ज़रीए़ से आंखों को Infection (या'नी जरासीम) से मह़फ़ूज़ रखती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! वुज़ू करने वाला नाक में पानी चढ़ाता है जिस से जिस्म के इस अहम तरीन आले नाक की सफ़ाई हो जाती है और पानी के अन्दर काम करने वाली बर्क़ी रौ से नाक के अन्दरूनी ग़ैर म-र-ई रूओं की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

कारकर्दगी को तक़्वियत मिलती है और मुसल्मान वुज़ू की ब–र–कत से नाक के बे शुमार पेचीदा अमराज़ से मह़फ़ूज़ हो जाता है। **दाइमी नज़्ला और नाक के ज़ख़्म के मरीज़ों के लिये नाक का ग़ुस्ल** (या'नी वुज़ू की त़रह़ नाक में पानी चढ़ाना) **बेह़द मुफ़ीद है ।**

चेहरा धोने की ह़िक्मतें

आज कल फ़ज़ाओं में धूएं वग़ैरा की आलू–दगियां बढ़ती जा रही हैं, मुख़्तलिफ़ कीमियावी माद्दे सीसा वग़ैरा मैल कुचैल की शक्ल में आंखों और चेहरे वग़ैरा पर जमता रहता है, अगर चेहरा न धोया जाए तो चेहरे और आंखें कई अमराज़ से दो चार हो जाएं। एक यूरोपियन डॉक्टर ने एक मक़ाला लिखा जिस का नाम था। **: आंख, पानी, सिह़्ह़त** (Eye, Water, Health) इस में उस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ''अपनी आंखों को दिन में कई बार धोते रहो वरना तुम्हें ख़त़रनाक बीमारियों से दो चार होना पड़ेगा।'' चेहरा धोने से मुंह पर **कील** नहीं निकलते या कम निकलते हैं। माहिरीने हुस्न व सिह़्ह़त इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हर त़रह़ के Cream और Lotion वग़ैरा चेहरे पर दाग़ छोड़ते हैं, चेहरे को ख़ूब सूरत बनाने के लिये चेहरे को कई बार धोना लाज़िमी है। ''अमेरीकन काउन्सिल फ़ोर ब्यूटी'' की सरकर्दा मिम्बर ''**बेचर**'' ने क्या ख़ूब इन्किशाफ़ किया है कहती है : ''**मुसल्मानों को किसी क़िस्म के कीमियावी लोशन की ह़ाजत नहीं वुज़ू से इन का चेहरा धुल कर कई बीमारियों से मह़फ़ूज़ हो जाता है।**'' मह़्कमए माह़ोलियात के माहिरीन का कहना है : ''चेहरे की एलर्जी से बचने के लिये इस को बार बार धोना चाहिये।'' اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ऐसा सिर्फ़ वुज़ू के ज़रीए ही मुम्किन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ !

वुज़ू में चेहरा धोने से एलर्जी से चेहरे की ह़िफ़ाज़त होती, इस का मसाज हो जाता, ख़ून का दौरान चेहरे की त़रफ़ रवां हो जाता, मैल कुचैल भी उतर जाता और चेहरे का हुस्न दो बाला हो जाता है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अन्धा पन से तह़फ़्फ़ुज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आंखों की एक बीमारी है जिस में इस की रत़ूबते अस्लिय्या या'नी अस्ली तरी कम या ख़त्म हो जाती और मरीज़ आहिस्ता आहिस्ता **अन्धा** हो जाता है । तिब्बी उसूल के मुत़ाबिक़ अगर भंवों को वक़्तन फ़ वक़्तन तर किया जाता रहे तो इस ख़ौफ़नाक मरज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो सकता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! वुज़ू करने वाला मुंह धोता है और इस त़रह़ उस की भंवें तर होती रहती हैं । आ़शिक़ाने रसूल की दाढ़ी भी वुज़ू में धुलती है और इस में भी ख़ूब ह़िक्मतें हैं, डॉक्टर प्रोफ़ेसर ज्योर्ज एल कहता है : "मुंह धोने से दाढ़ी में उलझे हुए जरासीम बह जाते हैं, जड़ तक पानी पहुंचने से बालों की जड़ें मज़्बूत़ होती हैं, दाढ़ी के ख़िलाल से जूओं का ख़त़रा दूर होता है, **दाढ़ी में पानी की तरी के ठहराव से गरदन के पट्ठों, थाईराईड ग्लेंड और गले के अमराज़ से ह़िफ़ाज़त होती है ।"**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

कोहनियां धोने की ह़िक्मतें

कोहनी पर तीन[3] बड़ी रगें हैं जिन का तअ़ल्लुक़ दिल, जिगर और दिमाग़ से है और जिस्म का येह ह़िस्सा उ़मूमन ढका रहता है अगर इस को पानी और हवा न लगे तो मु-तअ़द्दद दिमाग़ी और आ'साबी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

अमराज़ पैदा हो सकते हैं। **वुज़ू में कोहनियों समेत हाथ धोने से दिल, जिगर और दिमाग़ को तक़्वियत पहुंचती है** और इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह इन के अमराज़ से मह़फ़ूज़ रहेंगे। मज़ीद येह कि कोहनियों समेत हाथ धोने से सीने के अन्दर ज़ख़ीरा शुदा रोशनियों से बराहे रास्त इन्सान का तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाता है और रोशनियों का हुजूम एक बहाव की शक्ल इख़्तियार कर लेता है, इस अ़मल से हाथों के अ़-ज़लात या'नी कलपुर्ज़े मज़ीद त़ाक़त वर हो जाते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्ह़ की ह़िक्मतें

सर और गरदन के दरमियान "ह़ब्लुल वरीद" या'नी शहरग वाक़ेअ़ है इस का तअ़ल्लुक़ रीढ़ की हड्डी और ह़राम मग़ज़ और जिस्म के तमाम तर जोड़ों से है। जब वुज़ू करने वाला गरदन का मस्ह़ करता है तो हाथों के ज़रीए़ बर्क़ी रौ निकल कर शहरग में ज़ख़ीरा हो जाती है और रीढ़ की हड्डी से होती हुई जिस्म के तमाम आ'साबी निज़ाम में फैल जाती है और इस से आ'साबी निज़ाम को तुवानाई ह़ासिल होती है।

पागलों का डोक्टर

एक साह़िब का बयान है : मैं फ़्रान्स में एक जगह वुज़ू कर रहा था, एक शख़्स खड़ा बड़े ग़ौर से मुझे देखता रहा ! जब मैं फ़ारिग़ हुवा तो उस ने मुझ से पूछा : आप कौन और कहां के वत़नी हैं ? मैं ने जवाब दिया : मैं पाकिस्तानी मुसल्मान हूं। पूछा : पाकिस्तान में कितने पागल ख़ाने हैं ? इस अ़जीबो ग़रीब सुवाल पर मैं चौंका मगर मैं ने कह दिया : दो चार होंगे। पूछा : अभी तुम ने क्या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है । (جامع صغیر)

किया ? मैं ने कहा : **वुज़ू** । कहने लगा : क्या रोज़ाना करते हो ? मैं ने कहा : हां, बल्कि पांच वक़्त । वोह बड़ा हैरान हुवा और बोला : मैं Mental Hospital में सर्जन हूं और पागल पन के अस्बाब की तह्क़ीक़ मेरा मश्ग़ला है, मेरी तह्क़ीक़ येह है कि दिमाग़ से सारे बदन में सिग्नल जाते हैं और आ'ज़ा काम करते हैं, हमारा दिमाग़ हर वक़्त Fluid (माएअ़) के अन्दर Float[1] कर रहा है । इस लिये हम भागदौड़ करते हैं और दिमाग़ को कुछ नहीं होता अगर वोह कोई Rigid (सख़्त) शै होती तो अब तक टूट चुकी होती । दिमाग़ से चन्द बारीक रगें (Conductor) (मूसिल या'नी पहुंचाने वाली) बन कर हमारी गरदन की पुश्त से सारे जिस्म को जाती हैं । अगर बाल बहुत बढ़ा दिये जाएं और गरदन की पुश्त को ख़ुश्क रखा जाए तो इन रगों या'नी (Conductor) में ख़ुश्की पैदा हो जाने का ख़त्रा खड़ा हो जाता है और बारहा ऐसा भी होता है कि इन्सान का दिमाग़ काम करना छोड़ देता है और वोह **पागल** हो जाता है लिहाज़ा मैं ने सोचा कि गरदन की पुश्त को दिन में दो चार बार ज़रूर तर किया जाए । अभी मैं ने देखा कि हाथ मुंह धोने के साथ साथ गरदन के पीछे भी आप ने कुछ किया है, वाक़ेई आप लोग पागल नहीं हो सकते । मज़ीद येह कि **मस्ह करने से लू लगने और गरदन तोड़ बुख़ार से भी बचत होती है ।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पाउं धोने की हिक्मतें

पाउं सब से ज़ियादा धूल आलूद होते हैं । पहले पहल infection (या'नी जरासीम) पाउं की उंग्लियों के दरमियानी हिस्से से शुरूअ़ होता

1 : या'नी तैरना ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

है। वुज़ू में पाउं धोने से गर्दो गुबार और जरासीम बह जाते हैं और बचे खुचे जरासीम पाउं की उंग्लियों के ख़िलाल से निकल जाते हैं। **लिहाज़ा वुज़ू में सुन्नत के मुताबिक़ पाउं धोने से नींद की कमी, दिमाग़ी ख़ुश्की, घबराहट और मायूसी** (Depression) **जैसे परेशान कुन अमराज़ दूर होते हैं।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू का बचा हुवा पानी

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमा कर बचा हुवा पानी खड़े हो कर नोश फ़रमाया और एक ह़दीस में रिवायत किया गया कि **इस का पानी 70 मरज़ से शिफ़ा है** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 575) फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "किसी बरतन या लोटे से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी क़िब्ला रू खड़े हो कर पीना मुस्तह़ब है।" (تبیین الحقائق ج۱ص٤٤) वुज़ू का बचा हुवा पानी पीने के बारे में एक मुसल्मान डॉक्टर का कहना है : 《1》 इस का पहला असर मसाने पर पड़ता, पेशाब की रुकावट दूर होती और ख़ूब खुल कर पेशाब आता है 《2》 इस से ना जाइज़ शह्वत से ख़लासी ह़ासिल होती है 《3》 जिगर, मे'दा और मसाने की गरमी दूर होती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इन्सान चांद पर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू और साइन्स का मौज़ूअ़ चल रहा था, आज कल साइन्सी तह़क़ीक़ात की त़रफ़ बा'ज़ लोगों का ज़ियादा

रुज्हान होता है बल्कि कई ऐसे भी अफ़राद इस मुआ़-शरे में पाए जाते हैं जो इंग्रेज़ **मुह़क़्क़िक़ीन** और साइन्स दानों से काफ़ी मरऊ़ब होते हैं, ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि बहुत सारे ह़क़ाइक़ ऐसे हैं जिन की तलाश में साइन्स दान आज सर टकरा रहे हैं और मेरे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को पहले ही बयान फ़रमा चुके हैं। देखिये ! अपने दा'वे के मुत़ाबिक़ साइन्स दान अब चांद पर पहुंचे हैं मगर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह अल्फ़ाज़ लिखते वक़्त (या'नी **मुह़र्रमुल ह़राम** 1434 हि.) तक़रीबन **1434** साल पहले सफ़रे मे'राज में चांद से भी वराउल वरा (या'नी दूर से दूर) तशरीफ़ ले जा चुके हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ के उ़र्स शरीफ़ के मौक़अ़ पर दारुल उ़लूम अम्जदिय्या आ़लमगीर रोड बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद होने वाले एक मुशाइरे में शिर्कत का मौक़अ़ मिला जिस में ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ से येह "मिस्रए त़रह़" रखा गया था :

सर वोही सर जो तेरे क़दमों पे क़ुरबान गया

ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़त, बदरुत्त़रीक़त, मुसन्निफ़े बहारे शरीअ़त, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी साहिब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के शहज़ादे मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अज़्हरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने उस मुशाइरे में अपना जो कलाम पेश किया था उस का एक शे'र मुला-ह़ज़ा हो :

कहते हैं सत़्ह़ पे चांद की इन्सान गया   अ़र्शे आ'ज़म से वरा त़यबा का सुल्त़ान गया

या'नी कहा जा रहा है कि अब इन्सान चांद पर पहुंच गया है ! सच पूछो तो चांद बहुत ही क़रीब है, मेरे मीठे मदीने के अ़-ज़मत वाले सुल्त़ान, शहन्शाहे ज़मीनो आस्मान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो² जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मे'राज की रात चांद को पीछे छोड़ते हुए अ़र्शे आ'ज़म से भी बहुत ऊपर तशरीफ़ ले गए ।

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है चर्ख़ में आस्मान है   जाने मुराद अब किधर हाए तेरा मकान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नूर का खिलोना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रहा चांद, जिस पर साइन्स दान अब पहुंचने का दा'वा कर रहा है वोह चांद तो मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ताबेए़ फ़रमान है । चुनान्चे **"दलाइलुन्नुबुव्वह"** में है : सुल्त़ाने दो² जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन **अ़ब्दुल मुत्त़लिब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने आप (के बचपन शरीफ़ में आप) में ऐसी बात देखी जो आप की नुबुव्वत पर दलालत करती थी और मेरे ईमान लाने के अस्बाब में से येह भी एक सबब था । चुनान्चे मैं ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गहवारे (या'नी पिंघोड़े) में लैटे हुए चांद से बातें कर रहे थे और जिस त़रफ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उंगली से इशारा फ़रमाते चांद उसी त़रफ़ हो जाता था । सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं उस से बातें करता था और वोह मुझ से बातें करता था और मुझे रोने से बहलाता था और मैं उस के गिरने की आवाज़ सुनता था जब कि वोह अ़र्शे इलाही عَزَّوَجَلَّ के नीचे सज्दे में गिरता था ।" **(دلائلُ النّبوۃ للبیہقی ج ۲ ص ۴۱)**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में   क्या ही चलता था इशारों पर खिलोना नूर का

एक **महब्बत** वाले ने कहा है :

खेलते थे चांद से बचपन में आक़ा इस लिये   येह सरापा नूर थे वोह था खिलोना नूर का

मो 'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर

"बुख़ारी शरीफ़" में है : कुफ़्फ़ारे मक्का ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में मो'जिज़ा दिखाने का मुत़ा-लबा किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें चांद के दो[2] टुकड़े कर के दिखा दिये। **(بخاری ج ۲ ص۵۷۹ حدیث۳۸۶۸)** **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह 27, **सू-रतुल क़मर** की पहली और दूसरी[2] आयत में इर्शाद फ़रमाता है :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿۱﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला। पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद और अगर देखें कोई निशानी तो मुंह फेरते और कहते हैं येह तो जादू है चला आता।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हिस्सए आयत وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और शक़ हो गया चांद) के तह़त फ़रमाते हैं : इस आयत में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के एक बड़े **मो 'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर** (या'नी चांद के दो[2] टुकड़े हो जाने) का ज़िक्र है। (नूरुल इरफ़ान, स. 843)

इशारे से चांद चीर दिया, छुपे हुए ख़ुर को फेर लिया
गए हुए दिन को अ़स्र किया, येह ताबो तुवां तुम्हारे लिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू के तिब्बी फ़वाइद सुन कर आप ख़ुश हो गए होंगे मगर अ़र्ज़ करता चलूं कि सारे का सारा फ़न्ने तिब ज़न्नियात पर मब्नी है । साइन्सी तह़क़ीक़ात भी ह़त्मी (या'नी फ़ाइनल) नहीं होतीं, बदलती रहती हैं । हां **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात अटल हैं वोह नहीं बदलेंगे । हमें सुन्नतों पर अ़मल तिब्बी फ़वाइद पाने के लिये नहीं सिर्फ़ व सिर्फ़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर करना चाहिये, लिहाज़ा इस लिये वुज़ू करना कि मेरा ब्लड प्रेशर नोर्मल हो जाए या मैं ताज़ा दम हो जाऊंगा या डाएटिंग के लिये रोज़ा रखना ताकि भूक के फ़वाइद ह़ासिल हों । सफ़रे मदीना इस लिये करना कि आबो हवा भी तब्दील हो जाएगी और घर और कारोबारी **झन्झट** से भी कुछ दिन सुकून मिलेगा । या दीनी मुत़ा-लआ़ इस लिये करना कि मेरा टाइम पास हो जाएगा । इस त़रह़ की निय्यतों से आ'माल बजा लाने वालों को सवाब नहीं मिलेगा । अगर हम अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश करने के लिये करेंगे तो सवाब भी मिलेगा और ज़िम्नन इस के फ़वाइद भी ह़ासिल हो जाएंगे । लिहाज़ा ज़ाहिरी और बातिनी आदाब को मल्ह़ूज़ रखते हुए **वुज़ू भी हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ही के लिये करना चाहिये ।**

तसव्वुफ़ का अ़ज़ीम म-दनी नुस्ख़ा

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : वुज़ू से फ़राग़त के बा'द जब आप नमाज़ की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

तरफ़ मु-तवज्जेह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये कि जिन ज़ाहिरी आ'ज़ा पर लोगों की नज़र पड़ती है वोह तो ब ज़ाहिर ताहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर दिल को पाक किये बिग़ैर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात करना ह़या के ख़िलाफ़ है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिलों को भी देखने वाला है। मज़ीद फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी वुज़ू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाह को छोड़ने और उ़म्दा अख़्लाक़ अपनाने से होती है। जो शख़्स दिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता फ़क़त ज़ाहिरी त़हारत (या'नी सफ़ाई) और ज़ैबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जो बादशाह को मद्ऊ़ करता है और अपने घर को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोग़न करता है मगर मकान के अन्दरूनी ह़िस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता, अब ऐसी सूरत में जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी येह हर ज़ी शुऊ़र ख़ुद समझ सकता है। (اِحیاءُ العُلوم ج ۱ ص ۱۸۰ مُلَخَّصاً)

सुन्नत साइन्सी तह़क़ीक़ की मोह़ताज नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत साइन्सी तह़क़ीक़ की मोह़ताज नहीं और हमारा मक़्सूद इत्तिबाए़ साइन्स नहीं **इत्तिबाए़ सुन्नत** है, मुझे कहने दीजिये कि जब यूरोपियन माहिरीन बरसहा बरस की अ़रक़ रेज़ी के बा'द नतीजे का दरीचा खोलते हैं तो उन्हें सामने मुस्कुराती नूर बरसाती सुन्नते मुस-त़-फ़वी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही नज़र आती है ! दुन्या में लाख सैरो सियाह़त कीजिये, जितना चाहे ऐशो इ़शरत कीजिये, मगर आप के दिल को ह़क़ीक़ी राह़त मुयस्सर नहीं आएगी, सुकूने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

क़ल्ब सिर्फ़ो सिर्फ़ यादे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मिलेगा। दिल का चैन इश्क़े सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ही में हासिल होगा। दुन्या व आख़िरत की राहतें साइन्सी आलात T.V., VCR और internet के रू बरू नहीं इत्तिबाए सुन्नत में ही नसीब होंगी। **अगर आप वाक़ेई दोनों[2] जहां की भलाइयां चाहते हैं तो नमाज़ों और सुन्नतों को मज़्बूती से थाम लीजिये और इन्हें सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र अपना मा'मूल बना लीजिये।** हर इस्लामी भाई निय्यत करे कि मैं ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में 30 दिन और हर माह 3 दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया करूंगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ।

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर चले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

एक चुप सो[100] सुख

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

21 मुहर्रमुल हराम 1434 सि.हि.
6-12-2012

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	नंबर	उ़न्वान	नंबर
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	नाक में पानी डालने की हिक्मतें	11
वुज़ू की हिक्मतें सुनने के सबब क़बूले इस्लाम	1	चेहरा धोने की हिक्मतें	12
मग़रिबी जर्मनी का सेमीनार	2	अन्धा पन से तह़फ़्फ़ुज़	13
वुज़ू और हाई ब्लड प्रेशर	3	कोहनियां धोने की हिक्मतें	13
वुज़ू और फ़ालिज	3	मस्ह़ की हिक्मतें	14
मिस्वाक का क़द्रदान	4	पागलों का डोक्टर	14
कु़व्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये	5	पाउं धोने की हिक्मतें	15
मिस्वाक के बारे में दो अह़ादीसे मुबा–रका	5	वुज़ू का बचा हुवा पानी	16
मुंह के छाले का इ़लाज	6	इन्सान चांद पर	16
टूथ ब्रश के नुक़्सानात	6	नूर का खिलोना	18
क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?	7	मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर	19
मिस्वाक के 20 म–दनी फूल	7	सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये	20
हाथ धोने की हिक्मतें	10	तसव्वुफ़ का अ़ज़ीम म–दनी नुस्ख़ा	20
कुल्ली करने की हिक्मतें	10	सुन्नत साइन्सी तह़क़ीक़ की मोह़ताज नहीं	21

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت
نورالعرفان	پیر بھائی کمپنی مرکز الاولیاء لاہور	دلائل النبوۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی
مسلم	دارابن حزم بیروت	لوامح الانوار	داراحیاء التراث العربی بیروت
ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
مسندامام احمد	دارالفکر بیروت	حیاۃ الحیوان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسندابی یعلی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تبیین الحقائق	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاویٰ رضویہ	رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आमात**" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

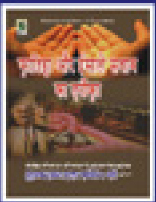

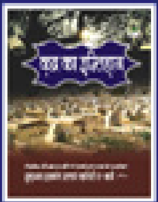

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, टी कोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net